1857 ई० के विद्रोह के कारण

साधारणतः अंग्रेज और कुछ भारतीय इतिहासकारों ने 1857 ई० के विद्रोह को अचानक सिद्ध करते हुये चर्बी वाले कारतूस एवं मात भारतीय सैनिकों के असंतोष को ही विद्रोह का एकमात्र कारण बताया है। यह सत्य है कि भारतीय सैनिकों की बगावत से ही विद्रोह की शुरुआत हुई परंतु इसे सिर्फ सिपाहियों के असंतोष का परिणाम मानना ऐतिहासिक दृष्टि से तर्कहीन होगा। वस्तुतः प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजी कम्पनी की नीतियों से भारतीय समाज में जो आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक असंतोष व्याप्त हो रहा था, 1857 का विद्रोह उसका संचित परिणाम था।

अंग्रेजों के प्रति जन असंतोष का एक कारण भारतीय जनता का उनके द्वारा आर्थिक शोषण था। वस्तुतः अंग्रेजों से पहले भी अनेक आक्रमणकारियों ने भारत पर आधिपत्य स्थापित किया, परंतु उससे सिर्फ राजनीतिक ढाँचे में ही परिवर्तन होता था एवं अर्थव्यवस्था आमतौर से अप्रभावित ही रहती थी। इससे किसानों एवं साधारण लोगों के जीवन पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था। परंतु इसके विपरीत अंग्रेजों ने परम्परागत आर्थिक ढाँचे का पूर्णतया विनाश करके किसानों, दस्तकारों, हस्तशिल्पकारों तथा परम्परागत जमींदारों एवं प्रधानों को दरिद्र बना दिया। बड़ी संख्या में किसान सूदखोरों की जमीन व्यापारियों और महाजनों के हाथों में चली गई। बढ़ती हुई औद्योगीकरण ने कारीगरों को रोजगार विहीन कर दिया एवं कठोर भूराजस्व प्रणाली ने सतत् किसानों को कृषि कार्य से विमुख कर दिया। भारत को एक ऐसा कृषि प्रधान उपनिवेश बना लिया गया जो इंग्लैंड के उद्योगों को कच्चा माल भेजता था और बने हुये माल को खरीदता था। भारतीय वस्तुओं पर लगाये गये अत्यधिक करों के बोझ से भारतीय

व्यापार खासकर के मलमल, सूती एवं रेशमी कपड़ों के व्यापार पर काफी हानिकारक प्रभाव पड़ा।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने साम्राज्यवादी नीतियों के तहत देशी रियासतों को ऐन-केन प्रकारेण हड़पने की नीति अपनायी। अंग्रेजों की यह हड़प नीति लार्ड वेलेजली की सहायक संधि के रूप में निश्चित आकार को प्राप्त किया। परंतु इसका चरम रूप हमें लार्ड डलहौजी के गोद प्रथा निषेध (व्यपगत का सिद्धान्त) के रूप में देखने को मिलता है। गोद प्रथा का निषेध करके डलहौजी ने 1848 में सतारा, 1849 में संबलपुर, 1853 में झांसी तथा 1854 में नागपुर को कम्पनी के साम्राज्य के अन्तर्गत करके व्यापक राजनीतिक सामाजिक असंतोष को जन्म दिया। कम्पनी के परम भक्त अवध के नवाब के राज्य को कुशासन के आधार पर कम्पनी में मिलाने से देशी रियासतों का भविष्य अनिश्चित हो गया। डलहौजी के 1849 एवं कैनिंग के 1856 की घोषणा ने मुगल साम्राज्य के नाममात्र के अस्तित्व पर भी प्रश्न चिह्न लगा दिया। यह स्पष्ट कर दिया गया कि बहादुरशाह की मृत्यु के पश्चात् सम्राट का पद समाप्त हो जायेगा एवं शाहजादा को लाल किला खाली करना पड़ेगा तथा उसे मात्र 15,000 रु० मासिक पेंशन मिलेगी। इससे मुस्लिम वर्ग में अंग्रेजों के प्रति तीव्र असंतोष व्याप्त हो गया। इसी प्रकार नाना साहब से विठूर की जागीरदारी छीनना एवं पेंशन बंद कर देने से भी राजनीतिक असंतोष को बढ़ावा मिला। रियासतों के हड़पने से लाखों लाख भारतीय सैनिक एवं अधिकारी बेकार हो गये। आगे चलकर इन लोगों ने भी अंग्रेजों के प्रति विद्रोहात्मक रुख अपनाया।

विदेशीपन ब्रिटिश शासन की बदनामी का एक आधारभूत कारण था। अपने पूर्ववर्ती विदेशी शासकों की भाँति अंग्रेज भारत में बसने नहीं आये थे, बल्कि उनका मुख्य उद्देश्य

भारत को लूट करके ब्रिटेन को सम्पन्न बनाना था। अंग्रेजों एवं भारतीयों के मध्य कोई सामाजिक जुड़ाव नहीं था। अंग्रेज जातिगत श्रेष्ठता की भावना के कारण उच्च वर्गीय भारतीयों के साथ भी मित्रवत व्यवहार नहीं रखते थे। अंग्रेजों की इस रंगभेद की नीति से एक स्पष्ट अंग्रेज विरोधी भावना भारतीयों में व्याप्त हुई जो 1857 के पहले भी अनेक विद्रोहों में परिलक्षित हुई है।

अंग्रेजशासकों की शासन पद्धति से भी भारतीय असंतुष्ट थे। अंग्रेजों द्वारा परम्परागत भारतीय शासन पद्धति को समाप्त कर अंग्रेजी शासन व्यवस्था लागू की गई जिससे समाज के विभिन्न वर्गों का अहित हुआ। रजवाड़े, किसान, जमींदार इत्यादि सभी नवीन शासन व्यवस्था से असंतुष्ट थे। फारसी के स्थान पर अंग्रेजी को सरकारी भाषा बनाना, उच्च पदों पर अंग्रेजों की नियुक्ति तथा भारतीयों को प्रशासन से यथासंभव दूर रखने की नीति के कारण उत्पन्न असंतोष ने इस विद्रोह के लिये प्रशासकीय कारणों की आधार भूमि तैयार की।

1857 ई० के विद्रोह का एक प्रमुख कारण भारतीयों की धार्मिक भावना की अवहेलना, परम्पराओं का आधुनिकीकरण एवं ईसाई धर्म के व्यापक प्रचार को भी माना जा सकता है। 1813 ई० के बाद प्रत्यक्ष रूप से अस्पताल, स्कूल, शिक्षण संस्थान, जेल आदि को ईसाई धर्म के प्रचार का केन्द्र बनाना, ईसाई धर्म ग्रहण करने वालों को विशेष सुविधा देना एवं यदा-कदा बलात् धर्म परिवर्तन ने भी असंतोष को बढ़ावा दिया।

यद्यपि अंग्रेजों द्वारा सती प्रथा का उन्मूलन, विधवा विवाह को कानूनी बनाना एवं लड़कियों के लिये भी पाश्चात्य शिक्षण की व्यवस्था भारत के हित में था किंतु इससे भी रूढ़िवादी धार्मिक सामाजिक भावनायें उभरी। अप्रैल 1850 ई० में लेक्स लोकी कानून अर्थात् धार्मिक अयोग्यता अधिनियम द्वारा हिन्दू रीति रिवाजों में परिवर्तन लाया

गया। इस कानून के द्वारा अब इसाई बनने वाले व्यक्ति को अपने पिता की संपति से वंचित नहीं किया जा सकता था। इन्हें भारतीय अपने समाज एवं संस्कृति में हस्तक्षेप के रूप में देखा।

इसी बीच कुछ ऐसी घटनायें घटित हुई जिसने ब्रिटिश शासन की अपराजेयता की आम धारणा को कम कर दिया। 1838-42 के अफगान युद्ध, 1845-49 के पंजाब युद्ध एवं 1854-56 के क्रीमिया युद्ध के कारण ब्रिटिश सेना की स्थिति एवं सम्मान में कमी आयी। दूसरे बिहार एवं बंगाल में संथाल आदिवासियों के विद्रोह यद्यपि असफल हो गये परंतु इसने जनआन्दोलन की शक्ति को स्पष्ट कर दिया।

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के प्रसार से सैन्य सेवा शर्तों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अंग्रेजत्व भारतीय सैनिकों के मध्य ब्रिटिश नीति पक्षपातपूर्ण थी। एक ही पद पर कार्य करने वाले अंग्रेज तथा भारतीय सैनिकों के वेतन तथा सेवा शर्तों में व्यापक असमानता थी। सेना के उच्च पद केवल अंग्रेजों के लिये सुरक्षित थे। असंतोष के ऐसे ही वातावरण में सरकार ने कुछ ऐसे निर्णय लिये जिससे असंतोष और बढ़ा। 1854 ई का डाकघर अधिनियम उनमें से एक था जिसने सैनिकों की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी। 1856 ई में कैनिंग की सरकार ने सामान्य सेना भर्ती अधिनियम पास किया जिसके अनुसार सेना के सभी सैनिकों को यह स्वीकार करना होता था कि जहाँ कहीं भी सरकार को आवश्यकता होगी उन्हें वहाँ जाना होगा। अब वे समुद्र पार जाने से मना नहीं कर सकते थे जो उनके धार्मिक प्रतिबद्धता या परंपरा के खिलाफ था। सैनिकों का असंतोष अनेकों बार 1764, 1806, 1824 एवं 1844 के छिटपुट विद्रोहों में व्यक्त हुआ था जिसकी चरम अभिव्यक्ति 1857 के विद्रोह में हुई।

सेना में चर्बीयुक्त कारतूसों का प्रयोग इस विद्रोह का तात्कालिक कारण बना। कम्पनी की सरकार ने 1856 ई में पुरानी लोहे वाली ब्राउन बैस बन्दूक के स्थान पर न्यू इन्फील्ड राइफल का प्रयोग प्रारंभ किया जिनमें चर्बीयुक्त कारतूस का प्रयोग होता था। इस कारतूस को प्रयोग में लाने के पहले दाँत से काटना पड़ता था। सेना में यह अफवाह फैली कि भारतीय सैनिकों के धर्म को भ्रष्ट करने के लिये कारतूस पर गाय एवं सुअर की चर्बी लगायी गई है। इस अफवाह ने चिंगारी का काम किया। सर्वप्रथम 23 जनवरी 1857 को दमदम के सैनिकों ने कारतूसों के प्रयोग को अस्वीकार किया। 26 फरवरी 1857 ई को बहरामपुर के सैनिकों ने कारतूसों के प्रयोग में लाने से मना कर दिया। 29 मार्च 1857 ई. को 34 वी रेजीमेण्ट बरकपुर के मंगल पाण्डेय ने अपने साथियों को विद्रोह के लिये आह्वान आह्वान किया और इसने एडजुटेंट लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी और मेजर सार्जेण्ट ह्यूसन को गोली मार दी। मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल को फाँसी पर लटका दिया गया और रेजीमेंट को भंग कर दी गई। 24 अप्रैल 1857 ई को मेरठ में तैनात देशी घुड़सवार सेना के 90 सिपाहियों ने चर्बी लगे कारतूसों को इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया। 9 मई 1857 को इनमें से 85 को बरखास्त कर 10 वर्ष की सजा सुनायी गई। दस मई 1857 को मेरठ में तैनात पूरी भारतीय सेना ने विद्रोह कर दिया और अपने अधिकारियों पर गोली चलाई। अपने साथियों को मुक्त करवाकर ये लोग 11 मई को दिल्ली पहुँचे और 12 मई 1857 को उन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। इसके बाद धीरे धीरे उत्तर भारत के एक बड़े क्षेत्र में विद्रोह का प्रसार हो गया।

इस तरह हम देखते हैं कि 1857 का विद्रोह कुल मिलाकर कम्पनी सरकार की उपनिवेशवादी नीतियों एवं चरित्र का प्रतिफल था।